सरकारी कामकाज में हिन्दी पर कार्यशाला

संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली के राजभाषा अनुभाग द्वारा दिनांक 22 फरवरी 2019 को 'सरकारी कामकाज में हिन्दी' विषय पर कार्यशाला का आयोजन रवीन्द्र भवन परिसर के मेघदूत थिएटर में किया गया। कार्यशाला में संगीत नाटक अकादेमी की सचिव डॉ. ऋतास्वामी चौधरी तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार में राजभाषा विभाग के निदेशक श्री वेद प्रकाश गौड़ के साथ ही गृह मंत्रालय, भारत सरकार में राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक श्री नरेन्द्र मेहरा और कवि एवं कला-मर्मज्ञ श्री कमल अवस्थी ने सरकारी कामकाज में हिन्दी विषय पर बड़े ही सारगर्भित विचार व्यक्त किए।

कार्यशाला का प्रारम्भ संगीत नाटक अकादेमी की सचिव डॉ. ऋतास्वामी चौधरी के स्वागत वक्तव्य से हुआ। उन्होंने राजभाषा हिन्दी की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि यह हम सब की जिम्मेदारी है कि सरकारी कामकाज में न केवल स्वयं हिन्दी का इस्तेमाल करें, बल्कि अपने सहकर्मियों को भी प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि हिन्दी में कार्य किसी दबाव से सम्भव नहीं है, बल्कि इसके लिए आंतरिक उत्प्रेरण एवं प्रेम की आवश्यकता है। अतः अपने दिल में अपनी राजभाषा, अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम से उत्प्रेरित हों और कामकाज में हिन्दी के इस्तेमाल को प्रश्रय दें।

इसके बाद श्री कमल अवस्थी ने बड़े ही सरल और सरस अंदाज़ में भाषा और कला के महत्व को रेखांकित करते हुए अपनी कुछ कविताओं और ग़ज़लों का पाठ किया। "नाद नक्कारे ने छेड़ा और बजी शहनाई सी/सुर का दरिया बह चला या ज्यूँ पवन पुरवाई सी"। ग़ज़ल के बाद उन्होंने कविता की छोर पकड़ी–" सा रे ग म प ध नी सा/ सप्त सुरों का चलन नदी सा/सुर का लय का ताल का संगम/गंगा जमुना सरस्वती सा"।

पद्यात्मक उद्‌बोधन के बाद गृह मंत्रालय, भारत सरकार में राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक श्री नरेन्द्र मेहरा ने राजभाषा से सम्बंधित नियमों/प्रावधानों की चर्चा करते हुए कहा कि यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि संगीत नाटक अकादेमी ने राजभाषा के क्रियान्वयन में तत्परता प्रदर्शित की है और यहाँ लगभग 90% कार्य हिन्दी में किए जाते हैं। उन्होंने राजभाषा से सम्बंधित पुरस्कारों के बारे में बात करते हुए कहा कि संगीत नाटक अकादेमी को इनमें से कई पुरस्कार मिल चुके हैं। उन्होंने इसके लिए राजभाषा अनुभाग की प्रशंसा भी की। उन्होंने कहा कि हम सभी को हिन्दी भाषा को अपने जीवन में पूर्णरूप से उतारना चाहिए। हम जब हिन्दी में स्नेहीजनों से बात कर सकते हैं, हिन्दी में फिल्में देख सकते हैं, हिन्दी में अपने सुख-दुख बाँट सकते हैं तो फिर कार्यालयी कार्य करने में भी दिक्कत नहीं होनी चाहिए।

अंत में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार में राजभाषा निदेशक श्री वेदप्रकाश गौड़ ने कहा कि भाषा की आज़ादी देश की आज़ादी से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि भाषा आज़ाद होगी तो देश ख़ुद-ब-ख़ुद आज़ाद हो जाएगा। लेकिन यदि देश आज़ाद रहा और भाषा के स्तर पर हम ग़ुलाम रहे तो आज़ादी चंद दिनों की मेहमान बन कर रह जाएगी। भाषा ही संस्कृति और सभ्यता का वक्ता होती है। उन्होंने इम्फाल स्थित जवाहरलाल नेहरू मणिपुर डांस एकेडमी का ज़िक्र किया और कहा कि अब वहाँ 35% तक कार्य हिन्दी में हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि हिन्दी राष्ट्रभाषा है और यह जोड़ने वाली भाषा है, अतः इसका सम्मान करना चाहिए और हमें अपने कामकाज में इसका इस्तेमाल करना चाहिए।

श्री गौड़ के वक्तव्य के बाद राजभाषा अनुभाग के श्री तेजस्वरूप त्रिवेदी ने सभी वक्ताओं को धन्यवाद दिया और कहा कि निश्चित रूप से इस कार्यशाला का फलाफल हम लोगों को मिलेगा। उन्होंने मैथिलीशरण गुप्त की कविता की इन पंक्तियों के साथ कार्यशाला का समापन किया–मानस भवन में आर्य जन जिनकी उतारें आरती/भगवान भारतवर्ष में गूंजे हमारी भारती। कार्यशाला के दौरान बड़ी संख्या में अकादेमी के अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे।